Dr Raj Gopal,
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar.

Nayaya : Inference (Lecture-1)
(न्याय : अनुमान प्रमाण) (व्याख्यान-1)

अनुमान न्याय दर्शन का दूसरा प्रमाण है। अनुमान दो शब्दों के मेल से बना है - 'अनु' और 'मान'। अनु का अर्थ पश्चात और मान का अर्थ ज्ञान होता है। अनुमान का अर्थ है वह ज्ञान जो पूर्व ज्ञान पर आधारित हो। जैसे - पहाड़ पर धुँए को देखकर वहाँ आग होने का अनुमान किया जाता है। गौतम ने अनुमान को 'तत्पूर्वकम् प्रत्यक्ष मूलक' कहा है। अर्थात अनुमान वह ज्ञान है जिसमें प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की और जाया जाता है। पाश्चात्य तर्कशास्त्र में भी प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर जाना आगमन कहा जाता है। न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष और अनुमान दोनों को प्रमाण माना गया है। फिर भी दोनों में अंतर दृष्टिगत है।

प्रत्यक्ष ज्ञान स्वतंत्र एवं निरपेक्ष रूप से ज्ञान का साधन है, परन्तु अनुमान की उत्पत्ति प्रत्यक्ष पर आश्रित है। इसलिए अनुमान को 'प्रत्यक्ष मूलक' ज्ञान कहा जाता है। प्रत्यक्ष ज्ञान वर्तमान तक सीमित है। इसके विपरीत अनुमान से भूत और भविष्य का भी ज्ञान होता है। अतः अनुमान का क्षेत्र प्रत्यक्ष के क्षेत्र से बड़ा है। प्रत्यक्ष ज्ञान सन्देहरहित एवं निश्चित होता है। परन्तु अनुमानजन्य ज्ञान संशयपूर्ण एवं अनिश्चित होता है। इसके कारण कभी-कभी अनुमान गलत भी होते हैं। एक ही रूप के आधार से किये गये अनुमानों का निष्कर्ष भिन्न-भिन्न होता है। प्रत्यक्ष की उत्पत्ति इन्द्रियों के द्वारा होती है। जिसके कारण सभी प्रत्यक्ष

Scanned with CamScanner

में वस्तु की उपस्थिति स्पष्ट ज्ञात हो होती है, परन्तु अनुमान का ज्ञान व्याप्ति की विविधता के कारण भिन्न भिन्न प्रकार से होती है। जहाँ प्रत्यक्ष न्यायशास्त्र में मौलिक प्रमाण है। वहीं अनुमान का स्थान प्रत्यक्ष के बाद है। अतः प्रत्यक्ष प्रथम कोटि का प्रमाण है अनुमान द्वितीय कोटि का प्रमाण है। अनुमान उस ज्ञान को कहते हैं जो पूर्व ज्ञान पर आधारित हो। अनुमान का उदाहरण निम्न है।

पहाड़ पर आग है
क्योंकि वहाँ धुआँ है,
जहाँ जहाँ धुआँ है वहाँ वहाँ आग है।

यह अनुमान धुआँ और आग के व्याप्ति संबंध पर आधारित है। दो वस्तुओं के बीच आवश्यक और सामान्य संबंध को व्याप्ति कहा जाता है। जहाँ जहाँ धुआँ है वहाँ वहाँ आग है यह व्याप्ति वाक्य है। उपरोक्त तर्क में धुआँ को देखकर आग का ज्ञान इसी व्याप्ति वाक्य के कारण हुआ है।

अनुमान में कम से कम तीन वाक्य होते हैं। ये अनुमान के तीन अवयव हैं। - पक्ष, साध्य, हेतु। पक्ष अनुमान का वह अंग है जिसके संबंध में अनुमान किया जाता है, उपरोक्त उदाहरण में पहाड़ पक्ष है। पक्ष के संबंध में जो कुछ सिद्ध किया जाता है उसे साध्य कहते हैं। आग साध्य है, क्योंकि पहाड़ पर आग का होना सिद्ध किया जाता है। हेतु जिसके द्वारा पक्ष में साध्य का होना बतलाया जाता है उसे हेतु कहलाता है। उपरोक्त उदाहरण में धुआँ हेतु है, क्योंकि धुएँ को देखकर ही पहाड़ पर आग होने का अनुमान किया जाता है। इन्हीं तीनों पदों के द्वारा अनुमान किया जाता है।

Scanned with CamScanner